5. पशुपालक आर्य

इस पाठ के सभी चित्रों को देख कर चर्चा करो कि उनमें क्या हो रहा है? चित्रों से तुम पशुपालक आर्य लोगों के बारे में क्या-क्या जान पाए?
इस पाठ से तुम उनके बारे में और क्या-क्या जानना चाहोगे? मन में उठ रहे सवालों की सूची बना लो। फिर पाठ पढ़ कर देखो।

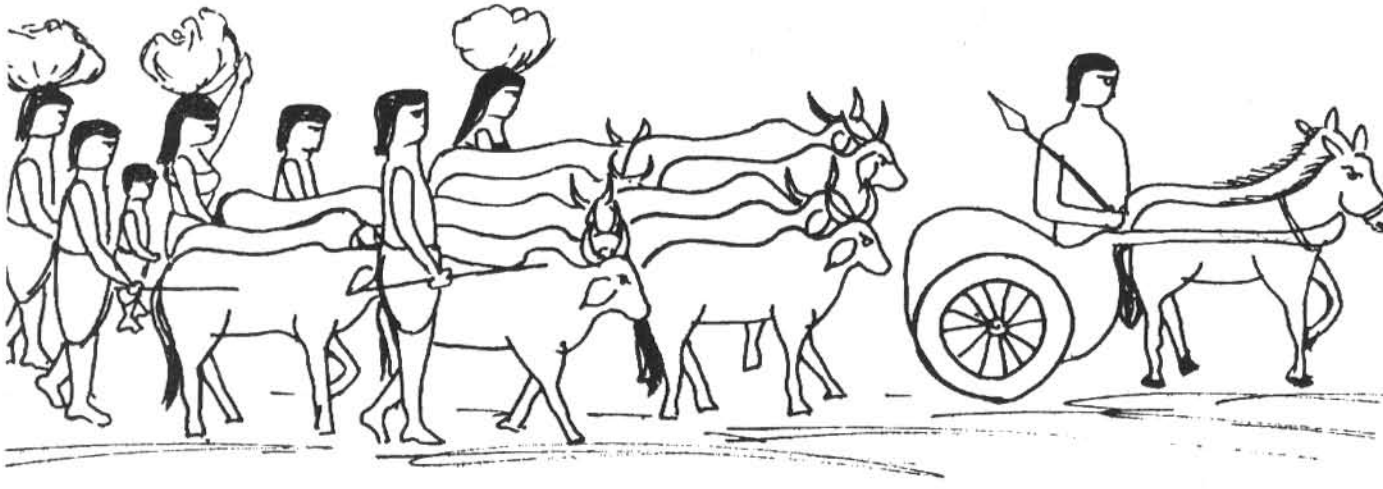

शहर नष्ट होने के बाद

सिन्धु-घाटी के शहर जब नष्ट हो गए, तब की बात है। उन शहरों के घर ढह चुके थे और मिट्टी के नीचे दब चुके थे। पर उन लोगों के गांव बचे रहे। उन गांवों में किसान खेती करते रहे, कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते रहे और दूसरे कारीगर तांबे और कांसे की चीज़ें बनाते रहे। तब, इन्हीं गांवों के आसपास कुछ और लोग भी आकर बसे जो अपने आपको 'आर्य' कहते थे।

आर्य लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी जैसे पशुओं को पालते थे। उनके पास हज़ारों की संख्या में पशु थे। इतने सारे पशुओं के लिए चारे-पानी का इन्तज़ाम करना आर्यों का सबसे बड़ा काम था। वे लोग खेती बहुत कम करते थे। इस तरह उनका जीवन गांव के किसानों के जीवन से बहुत फर्क था।

आर्यों की भाषा भी अलग थी। वे संस्कृत भाषा बोलते थे। उनके देवी-देवता और रीति-रिवाज़ भी गांव के लोगों से अलग थे। वे एक अनोखा जानवर

भी लाए थे। यह था तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा। वे घोड़ों को रथों में जोत कर सवारी करते थे।

चारे-पानी की खोज में

आर्यों के पास हज़ारों पालतू पशु होते थे। इतने सारे जानवरों के लिए जहां चारा-पानी मिल जाता वहां आर्य लोग बसा करते थे। मगर हज़ारों गाय-घोड़ों के लिए एक ही इलाके से हमेशा तो चारा-पानी नहीं मिल सकता। कभी चारा-पानी कम हो जाता था या खत्म होने लगता था। कभी जानवर इतने ज़्यादा हो जाते कि चारा-पानी कम पड़ने लगता था।

चारा-पानी कम पड़ने पर आर्यों के **कबीले** में से कुछ लोग अपने जानवरों को लेकर निकल पड़ते थे और जहां चारा मिलता वहां जाकर फिर से बस जाते थे। कई सालों बाद जब चारे पानी की फिर कमी होने लगती तो कुछ लोग और आगे निकल जाते थे। इस तरह आर्य लोग अपने पशुओं के साथ नई-नई जगहों पर बसते चले गए।

हज़ारों साल पहले आर्य लोग काले सागर और कैस्पियन सागर के पास के मैदानों में रहते थे। वहां से वे फैलते गए और नई-नई जगह बसते गए। ऐसे कई सौ साल बीते। आर्य लोग फैलते-फैलते सिन्धु, सतलज, झेलम, व्यास और सरस्वती नदियों के किनारे आ बसे।

एशिया के मानचित्र में देखो काला सागर और कैस्पियन सागर कहां है?

इन सागरों से किस दिशा में जाने पर सिन्धु नदी आएगी?

मानचित्र 2 में आर्यों के बसने का इलाका देखो।

उस इलाके का कुछ हिस्सा आज भारत के पंजाब राज्य में आता है और बहुत सा हिस्सा आज पाकिस्तान देश का भाग है ।

क्या तुमने आज भी ऐसे लोगों को देखा है जो बहुत बड़ी संख्या में पशु पालते हैं? वे लोग कहां के हैं? वे तुम्हारे यहां क्यों आते हैं? उनसे तुम्हें पशुपालकों के जीवन के बारे में क्या पता चलता है?

खाली स्थान भरो -- 1. आर्य लोग पशु पालते थे और ------ कम करते थे। 2. वे ----- की खोज में घूमते रहते थे। 3. वे ------ भाषा बोलते थे। 4. वे रथ में ----- जोतते थे।

सही विकल्प चुनो - आर्य सिन्धु नदी के किनारे जब बसे तब वहाँ --शहर थे/शहर बने ही नहीं थे/शहर बन के खत्म हो गए थे।

आर्यों का जीवन गांव के लोगों के जीवन से किन बातों में अलग था?

चलो उन लोगों के जीवन को देखें। कल्पना करें कि हम आर्यों की एक बस्ती में पहुँचे हैं।

कहानी

पशुपालक आर्यों की बस्ती

सरस्वती नदी के किनारे छोटे बड़े घरों की एक बस्ती थी। बस्ती में घास-फूस, लकड़ी और मिट्टी के बने घरों के अलावा कई **गोशालाएं** भी थीं। इस बस्ती में पुरु **वंश** के लोग रहते थे। आसपास के इलाके में पुरु वंश के लोगों की कुछ और बस्तियाँ भी थीं। आर्यों के कई वंश थे।

उनमें से पुरु वंश एक था।

बस्ती में सरमा नाम की एक लड़की थी। उस दिन सरमा रोज़ की तरह सूरज उगने से पहले ही उठ गई थी। उसने अपनी मां, पिता व भाई-बहनों के साथ गोशाला की सफाई की। गायों का दूध दुहा और नदी से पानी भी भर कर लाई।

आर्य और पणि

सरमा अपने भाई और पिता के साथ गाय चराने के लिए जंगल जाना चाहती थी। इसलिए दौड़ के नदी गई और जल्दी-जल्दी नहा के खाना खाने आ बैठी।

सरमा की मां ने खाना परोसा। **जौ** की रोटी, मक्खन, मांस और छाछ।

सरमा खाते-खाते बोली,"मां मुझे गेहूं की रोटी खाने का मन कर रहा है। तुम गेहूं की रोटी कब बनाओगी?"

मां ने कहा, "बेटी, अपने पास तो गेहूं नहीं है। गेहूं पणि लोगों के गांव में उगाया जाता है। पणि लोग जब हमसे घी या दूध लेने आते हैं तब बदले में गेहूं दे जाते हैं। पता नहीं क्या बात है, वे बहुत दिनों से यहां आए ही नहीं हैं।"

सरमा का भाई तभी खाना खाने आया था। मां की बात सुन कर बोला, "तुम्हें मालूम नहीं मां? कुछ दिन पहले अनु **जन** के लोगों ने पणियों के गांवों पर हमला किया। पणियों के किले तोड़ दिये। नदी पर बने बंधान तोड़ दिए और उनके गांव से गेहूं और सोने के ज़ेवर लेकर चले गए।" सरमा बोल पड़ी, 'अच्छा। तभी शायद पणि लोग हमारे यहां गेहूं लेकर नहीं आए।'

तुम यह समझ गए होगे कि गांवों में रहने वाले किसानों को आर्य **पणि** नाम से पुकारते थे। आर्यों और पणियों के बीच अक्सर लड़ाई हुआ करती थी। पर धीरे-धीरे उनके बीच चीज़ों का लेन-देन भी शुरू हो रहा था। वे एक-दूसरे की बातें सीखने लगे थे। ऊपर की कहानी में दिखाया है कि आर्यों के पुरु वंश और पणियों के बीच लेन-देन हो रहा था। पर, आर्यों का एक और वंश था। यह था अनु वंश। ऊपर की कहानी में अनु वंश और पणियों के बीच लड़ाई की बात बताई है।

कहानी में सरमा की मां उसे जौ की रोटी देती है। आर्य लोग खुद जौ नाम का अनाज उगा लेते थे। यह अनाज बहुत कम समय में और बहुत आसानी से उग जाता है। इसलिए हज़ारों पशुओं की देखभाल के साथ आर्यों के द्वारा जौ की थोड़ी बहुत खेती कर ली जाती थी।

वाक्य पूरे करो- 1.आर्य लोग ------ को पणि कहते थे। 2.पणि लोगों से आर्य ---------- के लिए लड़ते थे। 3.इस कहानी में तुमने आर्यों के ------ और ------- वंशों का नाम पढ़ा। 4.पणि लोगों से आर्य ------- लेते थे और बदले में-------देते थे। 5.आर्य अनाज कम उगाते थे क्योंकि ---------- । 6.आर्यों के भोजन में ---------- चीज़ें थीं। 7.आर्यों के घर ---------- से बने थे।

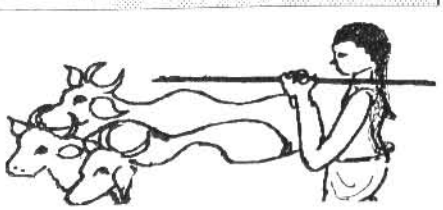

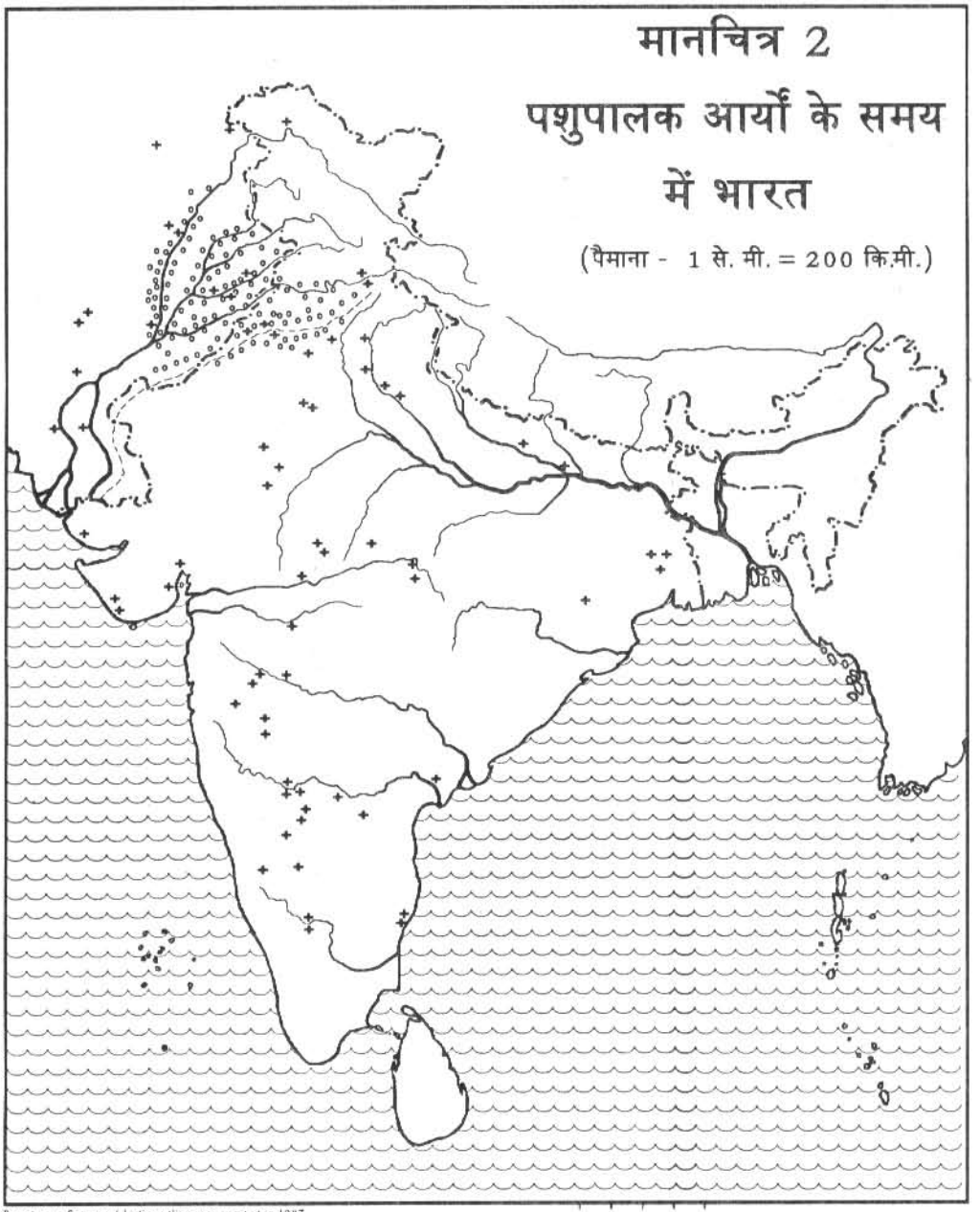

मानचित्र 2
पशुपालक आर्यों के समय में भारत

(पैमाना - 1 से. मी. = 200 कि.मी.)

Based upon Survey of India outline map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

©Government of India copyright, 1987

संकेत

- भारत की वर्तमान बाह्य सीमा
- सागर
- सरस्वती नदी
- पशुपालक आर्यों का इलाका
- अन्य खेती करने वालों का इलाका

गायें बह गयीं

सरमा अपने भाइयों और पिता के साथ गायें चराने गई। बस्ती के सभी परिवारों के पास दर्जनों गाएं और भेड़ें थीं। नदी किनारे के मैदान में बस्ती के सभी लोग गाय-भेड़ चराने आते थे। उस दिन एक बहुत बुरी घटना घटी। सरमा के पिंता और भैया नदी में गायें नहला रहे थे। अचानक नदी में बाढ़ आई। वे दोनों किसी तरह तैर कर बाहर निकले।

बस्ती के सभी लोगों ने मदद की, फिर भी

उनकी तीस-चालीस गायें पानी में बह गईं। गायों के सहारे ही तो उनका जीवन चलता था। आधी से अधिक गायें खत्म हो जाने से सरमा के परिवार को बड़ी दिक्कत हुई।

ऐसी दिक्कत में वे क्या कर सकते थे? सोच कर बताओ।

जब तुम्हारे गांव या शहर में किसी को पैसे आदि की ज़रूरत पड़ती है तो वह क्या-क्या उपाय करता है?

आर्यों के जन

सरमा के पिता ने अपनी समस्या बस्ती की सभा में रखी। बस्ती के सब लोग एक ही वंश के थे। इसलिए सब एक-दूसरे के रिश्तेदार थे। आर्य लोग अपने वंश के सब लोगों को मिला कर **'जन'** कहते थे। यानी पुरु वंश के सब लोग मिलकर पुरु जन कहलाते थे।

पुरु जन की सभा ने सरमा के पिता की समस्या सुनी। सभा में 70-80 लोग बैठे थे। उनमें से पांच-छः लोग विशेष आसन पर बैठे थे। बाकी लोग ज़मीन पर घास की बुनी चटाइयों पर बैठे थे। आसन पर बैठे लोग पुरु जन के **प्रमुख** लोग थे। उनके पास और लोगों से ज़्यादा गाय, घोड़े होते थे। उन्हीं के पास लकड़ी के बने रथ भी होते थे। वे वंश के महत्वपूर्ण लोग थे। इसलिए उनको विशेष आदर मिलता था। आर्य लोग अपने वंश के प्रमुख लोगों को **"राजन्य"** कहते थे। जन के बाकी लोग **"विश"** कहलाते थे।

सरमा के पिता जब बोल कर चटाई पर

गायें बह गयीं

सरमा अपने भाइयों और पिता के साथ गायें चराने गई। बस्ती के सभी परिवारों के पास दर्जनों गाएं और भेड़ें थीं। नदी किनारे के मैदान में बस्ती के सभी लोग गाय-भेड़ चराने आते थे। उस दिन एक बहुत बुरी घटना घटी। सरमा के पिता और भैया नदी में गायें नहला रहे थे। अंचानक नदी में बाढ़ आई। वे दोनों किसी तरह तैर कर बाहर निकले।

बस्ती के सभी लोगों ने मदद की, फिर भी

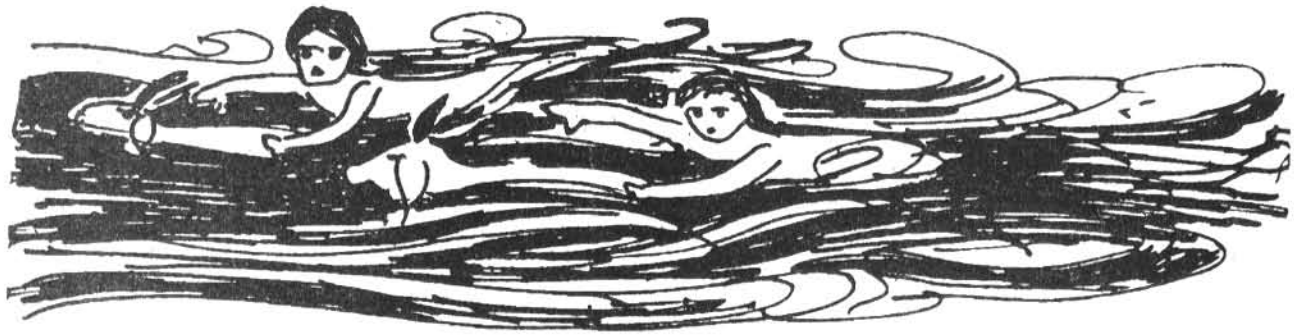

उनकी तीस-चालीस गायें पानी में बह गईं। गायों के सहारे ही तो उनका जीवन चलता था। आधी से अधिक गायें खत्म हो जाने से सरमा के परिवार को बड़ी दिक्कत हुई।

ऐसी दिक्कत में वे क्या कर सकते थे? सोच कर बताओ।

जब तुम्हारे गांव या शहर में किसी को पैसे आदि की ज़रूरत पड़ती है तो वह क्या-क्या उपाय करता है?

आर्यों के जन

सरमा के पिता ने अपनी समस्या बस्ती की सभा में रखी। बस्ती के सब लोग एक ही वंश के थे। इसलिए सब एक-दूसरे के रिश्तेदार थे। आर्य लोग अपने वंश के सब लोगों को मिला कर **'जन'** कहते थे। यानी पुरु वंश के सब लोग मिलकर पुरु जन कहलाते थे।

पुरु जन की सभा ने सरमा के पिता की समस्या सुनी। सभा में 70-80 लोग बैठे थे। उनमें से पांच-छः लोग विशेष आसन पर बैठे थे। बाकी लोग ज़मीन पर घास की बुनी चटाइयों पर बैठे थे। आसन पर बैठे लोग पुरु जन के **प्रमुख** लोग थे। उनके पास और लोगों से ज़्यादा गाय, घोड़े होते थे। उन्हीं के पास लकड़ी के बने रथ भी होते थे। वे वंश के महत्वपूर्ण लोग थे। इसलिए उनको विशेष आदर मिलता था। आर्य लोग अपने वंश के प्रमुख लोगों को **"राजन्य"** कहते थे। जन के बाकी लोग **"विश"** कहलाते थे।

सरमा के पिता जब बोल कर चटाई पर

अपनी जगह जा बैठे तो एक राजन्य ने कहा, "इसके साथ बहुत बुरा हुआ। जो-जो लोग दे सकते हैं वे अपनी-अपनी कुछ गायें इसे दे कर इसकी ज़रूरत पूरी करें। मैं अपनी पांच गायें दूंगा। अब और लोग बताएं।" इसके बाद जन के कई लोगों ने अपनी कुछ गाएं दे कर सरमा के परिवार की मदद की।

सरमा की गाएं कैसे खत्म हुईं?

सरमा के परिवार की किसने मदद की और कैसे?

सरमा के गांव में जो लोग थे वे एक-दूसरे के क्या लगते थे?

खाली स्थान भरो–1. जन के ——— लोगों को राजन्य कहा जाता था। (प्रमुख/बूढ़े/बहादुर) 2. केवल राजन्यों के पास ———थे। (रथ, गाय, भेड़) 3. एक जन में ——— राजन्य होते थे। (एक, कुछ, सब) 4.आर्यों के साधारण लोग——— कहलाते थे । (राजन्य, विश, पणि)

क्या तुम्हारे गांव/शहर में सब लोग एक ही वंश के हैं या एक दूसरे के रिश्तेदार हैं?

युद्ध और राजा

उन दिनों आर्यों का जीवन गायों के सहारे चलता था। इसलिए वे हमेशा कोशिश करते थे कि उनके जन के पास ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में अच्छी गायें हों। यही आर्य जनों के बीच होने वाले युद्धों का मुख्य कारण था। एक जन के लोग हमला कर के दूसरे जन की गायें भगा के ले जाते थे।

कभी एक जन के इलाके में चारा खत्म होने

लगता था। तब अगर किसी अच्छे हरे-भरे मैदान में दूसरे जन के लोग रह रहे हों तो उस मैदान पर अपने पशु चराने के लिए भी दो जनों में लड़ाई हो जाती थी।

एक दिन पुरु जन की बस्ती के राजन्य लोग इसी समस्या पर विचार करने बैठे।

एक राजन्य ने कहा, "हमारे जन के लोगों के पास गाएं कम पड़ रही हैं। हमें जल्दी ही कोई उपाय करना होगा।"

दूसरे राजन्य ने कहा, "अनु जन के पास बहुत सारी गाएं हैं और अच्छे घोड़े भी हैं। आजकल अनु जन बहुत ताकतवर हो रहा है। कुछ दिन पहले उन लोगों ने पणियों के गांव पर हमला भी किया था। क्यों न हम सब मिल कर अनु जन से युद्ध करें? युद्ध करके हम उनकी गाएं व घोड़े भी जीत लाएंगे और उन्हें हराकर कमज़ोर भी कर पाएंगे।"

सभी राजन्यों को यह विचार ठीक लगा। उन्होंने बैठ कर युद्ध की सारी **योजना** बना

डाली। योजना बनाने में बड़ी उम्र के राजन्यों से भी सलाह ली। फिर राजन्यों ने पूरे जन की एक सभा बुलाई और बाकी लोगों को (यानी विश को) बताया, "परसों रात हम सब मिल कर अनु जन पर धावा बोलेंगे। आप सब अपने हथियारों के साथ तैयार रहें। हम आसपास की बस्तियों में भी खबर कर सभी पुरुजनों को युद्ध के लिए बुला रहे हैं। अनु जन ताकतवर हैं। उन्हें हराना आसान नहीं होगा। पर हमने ऐसी योजना बनाई है कि हम ज़रूर जीतेंगे।"

सरमा के पिता ने भी युद्ध पर जाने की तैयारी की। उन्होंने अपनी कमान कसी और तीर ठीक किए। उनके पास घोड़े और रथ तो थे नहीं। जन के और साधारण लोगों की तरह वे पैदल ही लड़ने जाते थे।

असल में, पशुपालक आर्यों के पास अलग से **सेना** नहीं थी। जन के सब लोग मिल कर लड़ने जाते थे।

अगले दिन राजन्यों की बैठक हुई। बैठक में सवाल उठा कि युद्ध में पुरु जन का नेता कौन बनेगा? चर्चा होने लगी कि कौन सा राजन्य सबसे वीर है? युद्ध में सबसे कुशल कौन है? चर्चा के बाद राजन्यों ने अपने में से एक **युवक** को चुना। सबने मिल कर उसको **राजा** कहा।

इस तरह युद्ध में **अगुआई** करने के लिए आर्य जन का राजा चुना जाता था। जन को युद्ध में विजय दिलाना उसका काम था।

आर्य जनों के बीच लड़ाई किन कारणों से होती थी?

आर्य लोग राजा क्यों चुनते थे?

इन वाक्यों में से गलत वाक्यों पर गलत का निशान लगाओ और उन्हें सुधार कर लिखो -

1. युद्ध की योजना बनाने के लिए जन के साधारण लोग और राजन्य दोनों बैठते थे।

2. राजन्य सेना की मदद से युद्ध करते थे।

3. साधारण लोगों के पास रथ नहीं थे और वे पैदल लड़ाई करते थे।

4. राजन्य अपने में से एक को राजा चुनते थे।

यज्ञ और वेद

अगले दिन पुरु जन के सभी लोग- आदमी, औरतें, बच्चे - सब **यज्ञ** करने के लिए इकट्ठा हुए। आर्य लोग समय-समय पर अपने देवताओं के लिए यज्ञ करते थे।

यज्ञ के लिए आग जलाई गई। उस आग में दूध, घी, दही, जौ और मांस का चढ़ावा दिया गया। आर्य मानते थे कि अग्नि भी एक देवता है। अग्नि में जो भी भेंट चढ़ाई जाती है वो दूसरे देवताओं तक पहुंच जाती है और इन भेटों से खुश होकर देवता यज्ञ करने वालों

की इच्छा पूरी करते हैं।

जन के जो लोग यज्ञ करवाते थे, उनमें से कुछ को **ब्राह्मण** कहा जाता था। यज्ञ में भेंट चढ़ाने के साथ-साथ ब्राह्मण देवताओं की प्रशंसा में कई गीत गाने लगे। ये गीत पुरु जन के कुछ कवियों ने इन्द्र देवता के लिए बनाए थे।

"हे इन्द्र, तू हमारे इस यज्ञ में आ कर हमारी भेंट **स्वीकार** कर,

जिस प्रकार शिकारी शिकार ढूंढने निकलता है,

उसी प्रकार हम धन की तलाश में युद्ध करने निकले हैं।

हे इन्द्र तू हमारी सहायता कर ताकि हम युद्ध जीतें।

हे इन्द्र, हमें अपार धन दौलत दे।

सैकड़ों गायें और घोड़े दे कर हमारी यह कामना पूरी कर।

गायों के मालिक, हे इन्द्र, शत्रुओं की गोशालाओं के दरवाज़े खोल दो,

ताकि हम गायें जीत लायें।"

इस तरह ब्राम्हण गीत गाते जाते और आग में घी डालते जाते। ऐसा करने से पुरु जन के लोगों में विश्वास बना कि वे ज़रूर युद्ध जीतेंगे।

आर्यों के ये गीत संस्कृत भाषा में थे। इन गीतों को **ऋग्वेद** कहा जाता है। बहुत समय तक ये गीत लिखे नहीं गए। इन्हें बोल-बोल कर याद रखा जाता था और दूसरों को सिखाया जाता था। बाद में इन्हें लिख दिया गया। हम आज ऋग्वेद के गीतों को पढ़ कर आर्यों के जीवन की कई बातों को जान सकते हैं।

आर्य अपने देवता इन्द्र को क्या बुलाते थे?

आर्य लोग इन्द्र देवता से क्या मांगते थे और उसे खुश करने के लिए क्या करते थे?

आजकल लोग भगवान से किन चीज़ों के लिए प्रार्थना करते हैं और कैसे करते हैं?

राजा को बलि

यज्ञ के बाद पुरु जन की एक सभा हुई। सभा में सब लोगों ने चुने गए राजा को बधाई दी। जन के लोग नए राजा के बनने से खुश थे। वे अपने घर से उसके लिए कुछ-कुछ **उपहार** ले आए। कोई एक घड़ा घी ले आया। कोई दो गायें दे रहा था। किसी ने कुछ सुन्दर सोने के जेवर दिये। इस तरह राजा के पास काफी सारी भेंट जमा हो गई। ऐसी भेंट या उपहार को आर्य लोग **बलि** कहते थे। बलि में मिली चीज़ों को राजा

ने ब्राम्हणों, कवियों और दूसरे राजन्यों के बीच बांट दिया।

युद्ध

शाम को पुरु जन के सारे पुरुष युद्ध के लिए निकले। आधी रात को उन्होंने अनु जन की बस्ती पर हमला किया। तीन-चार लोग चुपके से गए। उन्होंने अनु जन की गोशाला और घुड़साल के दरवाज़े खोल दिए और जानवरों को हांक कर अपनी बस्ती की ओर दौड़ाने लगे। इस आवाज़ को सुन कर अनु जन के लोग उठ गए। पर उनकी लड़ने की तैयारी नहीं थी। उनके घोड़े भी चले गए थे। उनका सामना करने के लिए पुरु जन के राजन्य अपने रथों पर खड़े थे।

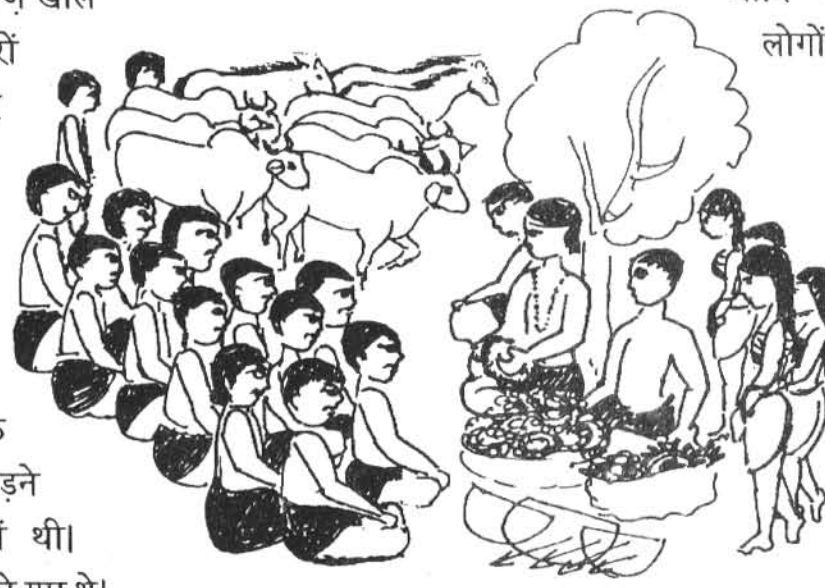

अनु जन के लोगों ने कुछ देर लड़ाई की पर वे बुरी तरह हार गए। पुरु जन के लोगों ने अनु जन की कीमती चीज़ें उठा लीं और कई लोगों को भी बन्दी बना कर ले गए।

अगले दिन पुरु जन की बस्ती में जीत और खुशी का शोर था। कोई कहता – "हम पांच हज़ार गाएं जीत कर लाए हैं।" और कोई बोलता – "सौ घोड़े भी मिले, सोने के बहुत से जेवर भी मिले।"

सभा

शाम को फिर एक सभा हुई। सभा में पुरु जन के राजा ने जीत में मिली गाएं, घोड़े, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों को जन के कई लोगों के बीच बांटा। सबसे बड़ा हिस्सा राजा ने अपने लिए रखा। फिर राजन्यों और ब्राह्मणों को हिस्सा मिला। कुछ गायें, भेड़, बकरी, अनाज आदि जन के साधारण लोगों को भी दिया गया। सरमा के पिता को 20 गायें मिलीं। इस तरह उनके परिवार की कठिनाई दूर हुई।

राजन्यों के पास गाएं, घोड़े, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों की संख्या और ज़्यादा हो गई और वे पहले से ज़्यादा ताकतवर बन गए।

राजा को बलि किसने दी और क्यों?

राजा ने बलि में मिली चीज़ों का क्या किया?

पुरु जन को युद्ध में क्या-क्या मिला?

चर्चा करो कि राजा ने युद्ध में मिली चीज़ें

-- ब्राह्मणों को क्यों दीं?

– राजन्यों को क्यों दीं?

– जन के साधारण लोगों को क्यों दीं?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पशुपालक आर्य और शिकारी मानव कई बातों में एक दूसरे से अलग थे। यहां दी गई तालिका में लिखा है कि उनके बीच क्या फर्क थे। तालिका में कुछ बातें ग़लत खानों में लिखी हैं। इन्हें सही खानों में डालो।

	शिकारी मानव	पशुपालक आर्य
खान-पान	जंगल से मिले फल-शिकार	गाय, भेड़, बकरी आदि से दूध व मांस और जौ का अनाज
रहने की जगह में	शिकार करना	लकड़ी, मिट्टी, घास-फूस की झोपड़ियां
काम	पशु पालना गुफा	जब कुछ सालों में चारे की कमी होती थी तो कुछ लोग दूसरी जगह चले जाते
घूमने फिरने में	जब भी जंगल में फल व शिकार मिलना बंद हो जाए तब दूसरी जगह चले जाते	

2. राजन्यों और जन के साधारण लोगों के बीच क्या फ़र्क था और वे एक दूसरे के लिए क्या करते थे? इस प्रश्न की जानकारी पृष्ठ 45, 46 और 47 में से पढ़ कर जानो और उत्तर लिखो।
3. आर्यों का राजा क्या-क्या काम करता था?
4. आर्य जन एक दूसरे से कैसे लड़ते थे, और आज दो देशों के बीच लड़ाई कैसे होती है? तुलना करके लिखो।
5. बलि क्या थी - सिर्फ दो वाक्यों में बताओ।
6. इस पाठ की कुछ बातें यहां लिखी हैं। पर, वे सही क्रम में नहीं हैं । इन्हें सही क्रम में जमाओ।
   क. आर्य लोग राजा को भेंट या बलि देते थे।
   ख.जन के सब लोग मिल कर दूसरे जन से युद्ध करते थे ।
   ग.आर्य जन के प्रमुख लोग अपने में से एक को राजा चुनते थे ।
   घ. राजा युद्ध में जीती गई चीज़ें जन के लोगों के बीच बांटता था ।
   च. आर्य जन युद्ध में जीत के लिए यज्ञ करते थे ।

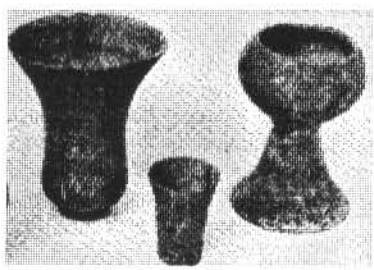

ये बहुत पुराने मिट्टी के बर्तन हैं।
शायद आर्यों के समय के हैं।

ये पुराने समय के बर्तनों पर बने चित्र हैं।